Review Of Research
Vol.1, Issue.11 , Aug; 12
ISSN:- 2249-894X
Available online at www.lbp.world

ORIGINAL ARTICLE

मत्स्यपुराण में युद्ध एवं सैन्यवर्णन

मोहनलाल मेघवाल

व्याख्याता संस्कृत , रा.स्ना. महाविद्यालय प्रतापगढ़ (राज.)

प्रस्तावना :

पौराणिक वाङ्.मय में मत्स्यपुराण का विशिष्ट स्थान है। यह पुराण पर्याप्तरूपेण विस्तृत है। इसमें अध्यायों की संख्या 291 है तथा इसमें श्लोक संख्या लगभग 15000 है। वैष्णव, शैव्, शाक्त, गण पत्यादि सभी सम्प्रदायों में मत्स्यपुराण समादृत है। इसमें भगवान के मन्वन्तर तथा पितृवंश का विस्तृत वर्णन है। श्राद्धों के सम्पूर्ण वर्णन के साथ चन्द्रवंशी राजाओं का वर्णन भी इस पुराण का विवेच्च विषय है।

मत्स्यपुराण में पंच लक्षणों के निर्वाह के साथ–साथ धर्मशास्त्र विषयक सामग्री का भी वर्णन व्यापक स्तर पर हुआ है। अनेक व्रतानुष्ठानों की विधि, विविध दानों की महिमा, नवग्रहों का स्वरूप एवं तर्पण विधि, प्रयाग महिमा, भूगोल–खगोल वर्णन, ज्योतिश्चक्र, त्रिपुरासुरसंग्राम, तारकासुर आख्यान, नृसिंह चरित्र, काशी तथा नर्मदा का महात्म्य, ऋषियों का वंश वर्णन, सती–सावित्री की कथा, राजधर्मो का वर्णन, पुराणों की विषयानुक्रमणिका, राजनीति, यात्राकाल स्वप्नशास्त्र, शकुनशास्त्र, अंगस्कुरण, ज्योतिषशास्त्र, रत्नविज्ञान, विविध देव प्रतिमा स्वरूप लक्षण, देवप्रतिष्ठा एवं गृहनिर्माण सम्बन्धी वास्तुविद्या आदि का इस पुराण में वर्णन प्राप्त होता है। डॉ. श्रीराम राय के शब्दों में 'मत्स्यपुराण ही एक ऐसा प्रगतिशील पुराण है, जिसमें इन विषयों का समावेश न केवल एक साथ हुआ है, बल्कि बदलती हुई ऐतिहासिक, सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियों में आवश्यकतानुसार इनका समय–समय पर समावेश होता रहा।[1]

युद्ध एवं सैन्यविज्ञान वर्णन की दृष्टि से भी मत्स्यपुराण का अत्यधिक महत्व है। इसके अनेक अध्यायों में विविध युद्ध एवं युद्ध विषयक तत्वों के वर्णन प्राप्त होते है। जैसे अन्यायी राजा वेन विप्रशाप से मृत्यु को प्राप्त हुआ।[2] *समुन्द्र–कन्या सवर्णा और बर्हि प्रजापति के संयोग से दस पुत्र उत्पन्न हुए, वे सभी धनुर्वेद के ज्ञाता थे।*[3] *ब्रह्मवरदान से दैवों द्वारा अवध्य पौलोम एवं काकेय दानवों का विजय (अर्जुन) ने संहार किया।*[4] *शिव के आशिर्वाद से संह्लादपुत्र निवातकवच को अर्जुन ने युद्ध क्षेत्र में यमलोक पहुँचा दिया।*[5] *भीम ने दंष्ट्रधारी से उत्पन्न एक लक्ष राक्षसों का संहार किया।*[6] *त्वष्टा ने सूर्य के प्रबल तेज को छाँटकर पृथक कर दिया। उस छँटे हुए तेज से विष्णु का सुदर्शन, भगवान रूद्र का शूल एवं देवराज इन्द्र का वज्र निर्मित हुए। पिनाकी शिव ने बृहस्पति भार्या तारा को सोम से मुक्त कराने के लिए ''अजगव'' नामक धनुष लेकर प्रस्थान किया। भूतेश्वर, सिंह समूदाय, गणेश आदि चौरासी गण, शत कोटि सेनाओं सहित कुबेर, एक पदम बेताल, तीन लाख नाग, बारह लाख किन्नर भी शिव के साथ युद्ध में लड़ने गये थे।*[7] *शिव ने आग्नेश्यास्त्र से प्रहार किया। दोनों ओर की सेनाओं द्वारा एक–दूसरे पर तीक्ष्ण शास्त्रों से प्रहार किया गया, जिसके फलस्वरूप दोनों सेनाएँ समग्र रूप से नष्ट होने लगी। क्रोधित रूद्र के ब्रह्मशीर्षास्त्र के विरूद्ध चन्द्रमा ने सोमास्त्र चलाया।*[8] *राक्षसराज कोशि द्वारा अप्सरा चित्रलेखा एवं उर्वशी को आकाश मार्ग से ले जाते हुए देखकर सूर्य के साथ भ्रमणशील बुध पुत्र पुरूरवा ने रणभूमि में वायण्यास्त्र का प्रयोग कर राक्षसराज केशि*

को परास्त किया। राक्षसराज कोशि ने युद्ध में देवराज इन्द्र को भी परास्त कर दिया था। युद्धोपरान्त राक्षसराज कोशि द्वारा अप्सराओं को इन्द्र को समर्पित कर देने पर दोनों की मित्रता प्रगाढ़ हो गई।[9]

बृहस्पति तथा शुक्राचार्य क्रमशः देवताओं तथा असुरों के गुरू एवं पुरोहित थे। संजीवनी विद्या से शुक्राचार्य युद्ध में मारे गये असुरों को पुनर्जीवित कर देते थे।[10] राजा वृषपर्वा के यहाँ रहकर असुरों की रक्षा करते थे। इसी दौरान बृहस्पति पुत्र कच ने वहाँ जाकर शुक्राचार्य का शिष्य बनकर संजीवनी विद्या सीखने के लिए पाँच सौ वर्ष तक ब्रह्मचार्य व्रत का पालन करते हुए उनकी गाये चराई। असुरों द्वारा कच के मारे जाने पर शुक्राचार्य पुत्री देवयानी अत्यन्त दुःखी हुई। पुत्री की प्रार्थना पर शुक्राचार्य ने कच को जीवित कर दिया। कम्बलवर्हिष का पुत्र रूक्मकवच अपने शत्रुओं को परास्तकर पृथ्वी का राजा बना।[11] देवता और असुरों का बारह बार संग्राम हुआ, जिसमें असुर परास्त हुए।[12] मत्स्यपुराण में उपर्युक्त विवेचन क्रम में गुरू की महिमा एवं महत्व का वर्णन भी प्राप्त होता है।[13] इसमें स्त्रीयों के साथ युद्ध एवं उनके वध को पापकृत्य माना गया।[14]

उपर्युक्त विवेचनोपरान्त स्पष्ट है कि मत्स्यपुराण में युद्ध एवं सैन्यविज्ञान के महत्वपूर्ण ऐतिहासिक वर्णन प्राप्त होते है।

पुराण साहित्य में अपनी नवीन उद्भावनाओं, ऐतिहासिकता तथा मौलिकता के कारण मत्स्यपुराण का महत्वपूर्ण स्थान है तथा प्राचीन भारतीय वाङ्मय और संस्कृति का युद्ध एवं सैन्य विज्ञान की दृष्टि से अध्ययन में इसका महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है।

सन्दर्भ सूची

1. रॉय, डॉ. श्रीराम, मत्स्यपुराण के अनुष्ठान एवं विधि विधानः एक ऐतिहासिक अध्ययन (प्रथम सं.) पृष्ठ 8–9
2. वेनमन्यायिनं विप्रा ममन्थुस्तत्करादभूत्। म.पु. 4/44
3. सवर्णायां तु सामुद्रयां दशाधत्त सुतान प्रभुः।
   सर्वे प्रचेतसो नाम धनुर्वेदस्य पारगाः।। वही, 4/47
4. पौलोमान् कालकेयांश्च मारीचोऽजनयत् पुरा।
   अवद्या येऽमराणां वै हिरण्यपुरवासिनः।।
   चर्तुर्मुखाल्लख्धवरास्ते हता विजयेन तु।
   विप्रचित्तिः सैंहिकेयान् सिंहिकायामजीजनत्।।
   वही, 6/24–25
5. कालवीर्यश्च विख्यातो दनुवंशविवर्धनाः।
   संह्लादस्य तु दैत्यस्य निवातकवचाः स्मृताः।।
   अवध्याः सर्वदेवानां गन्धर्वोरगरक्षसाम्।
   ये हता भर्गमाश्रित्य त्वर्जुनेन रणाजिरे।।
   वही, 6/28–29
6. रक्षोगणं क्रोधवशा स्वनामानमजीजनत्।
   दंष्ट्रिणां नियुतं तेषां भीमसेनादगात् क्षयम्।।
   वही, 6/43
7. धनुगृहीत्वाजगवं पुरारिर्जगाम भूतेश्वर–सिद्धजुष्टः।
   युद्धाय सोमेन विशेषदीप्त तृतीयनेत्रानलभीमवक्त्रः।।
   वही, 23/37
8. रूद्रः कोपाद् ब्रह्मशीर्षं मुमोच सोमोऽपि सोमास्त्रममोधवीर्यम्।
   वही, 23/41–43
9. सार्धमर्केण सोऽपश्यन्नीयमानामथाम्बरे।
   केशिना दानवेन्द्रेण चित्रलेखामथोर्वशीम।।

तं विनिर्जित्य समरे विविधायुधपाणिना।
बुधपुत्रेण वायण्यास्त्रं मुक्तवा यशोऽर्थिनां।
वही, 24/23–24

10. तान् पुनर्जीवयामास काव्यो विद्याबलाश्रयात्।
ततस्ते पुनरूत्थाय योधयांचक्रिरे सुरान्।।
वही, 25/11

11. निहत्य रूक्मकवचः परान कवचधारिणः।
धन्विनों विविधैर्बाणैरवाप्य पृथिवीमिमाम्।।
वही, 44/26

12. महासुराः द्वादशसु संग्रामेषु शरैर्हताः। वही, 47/73

13. न्यस्ते शस्त्रेऽभये दत्ते आचार्ये व्रतमास्थिते।
दत्वा भवन्तो ह्यभयं सम्प्राप्तानो जिघांसया।।
वही, 47/88

14. तं दृष्ट्वा स्त्रीवधं घोरं चक्रोध भृगुरीश्वरः।
ततोऽभिशप्तो भृगुणा विष्णुर्भार्यावधे तदा।।
यस्मात् ते जानतो धर्ममवह्या स्त्री निषूदिता।
वही, 47/105,106